लेनिन की जीवनी

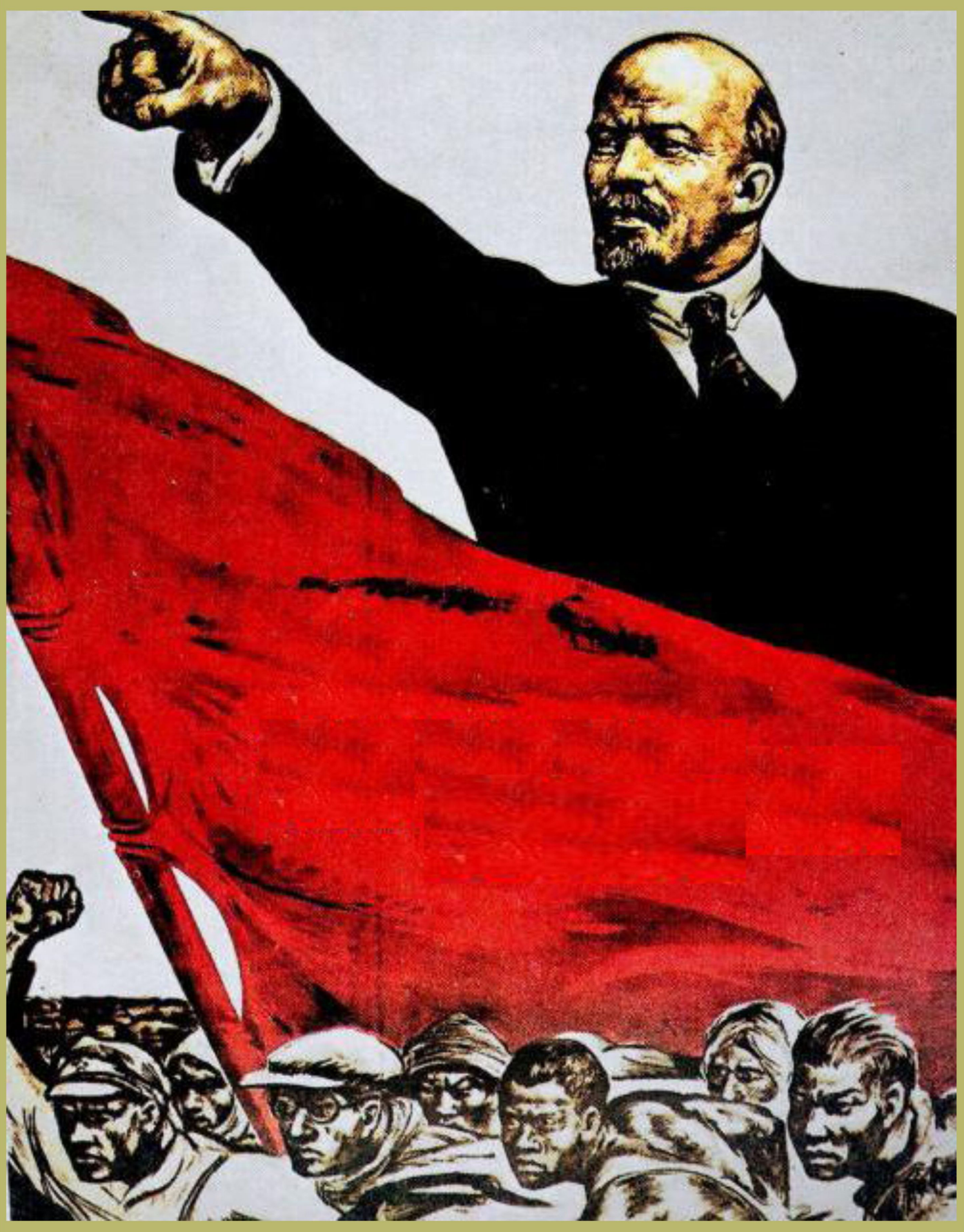

लेखक

राहुल सांकृत्यायन

लेनिन

व्लादिमिर इलिच लेनिन

हर दिन प्रगतिशील, मानवतावादी साहित्य पाने के लिए

- देश-दुनिया की हर महत्वपूर्ण घटना पर मजदूर वर्गीय दृष्टिकोण से लेख
- सुबह-सुबह प्रगतिशील कविता, कहानियां, उपन्यास, गीत-संगीत, हर रविवार पुस्तकों की पीडीएफ
- देश के महान क्रान्तिकारियों भगतसिंह, राहुल, गणेश शंकर विद्यार्थी आदि का साहित्य पीडीएफ व यूनिकोड फॉर्मेट में

मजदूर बिगुल व्हाटसएप्प चैनल से जुड़ने के लिए अपना नाम और जिला लिखकर इस नम्बर पर भेज दें - 9892808704

वैकल्पिक नम्बर : 9619039793

फेसबुक पेज : fb.com/unitingworkingclass

टेलीग्राम चैनल : www.t.me/mazdoorbigul

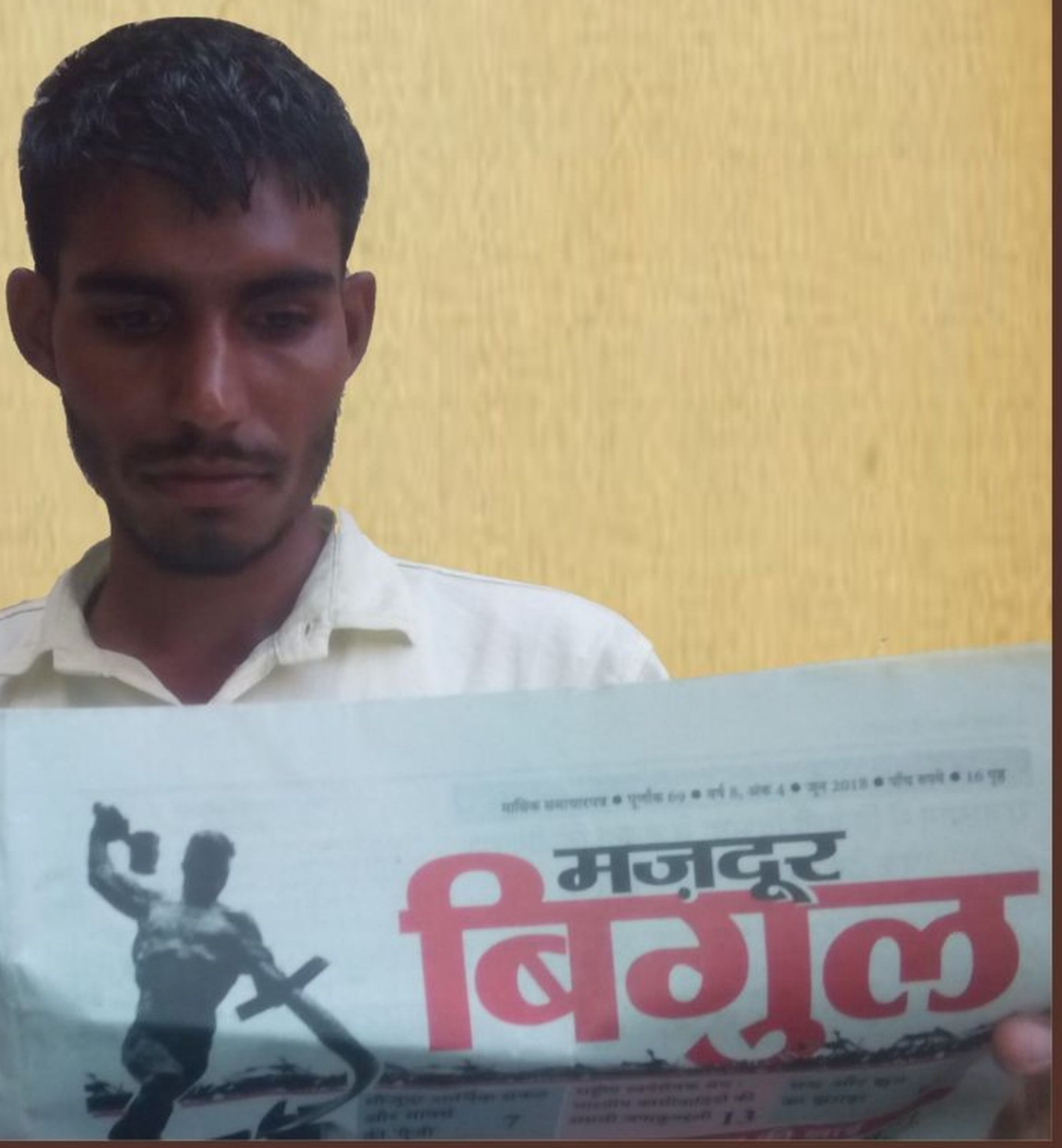

लेनिन

[एक जीवनी]

★

राहुल सांकृत्यायन

१९५५

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, लिमिटेड

आसफ अली रोड, नई दिल्ली १.

पहला संस्करण : जून, १९५५

मूल्य : अजिल्द ३ रुपया
सजिल्द ३ रु० ८ आ०

न्यू एज प्रिंटिंग प्रेस, आसफ अली रोड, नई दिल्ली में डी. पी. सिन्हा द्वारा मुद्रित
और उन्हीं के द्वारा पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस लिमिटेड, आसफ अली रोड,
नई दिल्ली-१ की तरफ़ से प्रकाशित।

प्राक्कथन

साम्यवाद (कम्युनिज़्म) ही मानव जाति की सारी बीमारियों की एक-मात्र रामवाण औषधि है, भारत का उद्धार भी उसी से है। ऐसी अवस्था में साम्यवाद के महान् तत्वदर्शियों और पथ-पृदर्शकों की अच्छी जीवनियों का हिन्दी में न होना खटकता था। इसी अभाव की पूर्ति के लिए मैंने मार्क्स, लेनिन, स्तालिन और माओ-त्से-तुंग की चार जीवनियाँ लिखने का संकल्प किया। इन जीवनियों में जीवन-घटनाओं के अतिरिक्त इन महापुरुषों के सिद्धान्तों और प्रयोगों को भी रखने की कोशिश की गयी है।

यह जीवनी मुख्यतः "मार्क्स-एंगेल्स-लेनिन प्रतिष्ठान" मास्को द्वारा प्रकाशित "व० ई० लेनिन" के आधार पर लिखी गयी है, यद्यपि कहीं-कहीं और श्रोतों से भी सहायता ली गयी है।

पुस्तकों का संग्रह करने में डा० महादेव साहा, साथी रमेश सिनहा और साथी सच्चिदानंद शर्मा ने बड़ी मदद की, इसलिए उनको धन्यवाद देना मैं अपना कर्त्तव्य समझता हूं। श्री मंगल सिंह परियार ने पुस्तक को टाइप करने में बड़ी मदद की, इसलिए उनका भी आभारी हूं।

पुस्तक बहुत बढ़ न जाय इसका मैंने बहुत ध्यान रखा, लेकिन साथ ही यह भी खयाल काम कर रहा था कि काम की बातें छूटने न पायें।

मसूरी,
जून, १९५५

राहुल सांकृत्यायन

विषय-सूची

१. बाल्य-काल (१८७०–८१ ई०)

१. माता-पिता और परिवार १
२. जन्म प्रदेश ३

२. विद्यार्थी-जीवन (१८८१–८७ ई०)

१. अध्ययन ६

३. क्रान्ति-दीक्षा (१८८७–९३ ई०)

१. पहली नज़रबंदी १२
२. क़ानून का अध्ययन १७

४. पहला क़दम (१८९३–९५ ई०)

१. पीतरबुर्ग में (१८९३ ई०) २१
२. "क़ानूनी मार्क्सवादियों" से लोहा ... २९
३. परदेश में पहली बार (१८९५ ई०) ... ३४
४. पार्टी संगठन की तैयारी ३७

५. बन्दी जीवन (१८९५–१९०० ई०)

१. ज़ारशाही कोप ४०
२. शुशेन्स्कोये में निर्वासित जीवन (१८९७–१९००) ४३
३. विभीषणों से लोहा ५०
४. पहली पार्टी कांग्रेस (१८९८ ई०) ... ५२
५. भविष्य के लिए तैयारी ५५

६. विदेश (१९००–५ ई०)

१. देश से प्रस्थान ५७
२. "इस्क्रा" (चिनगारी) ५८
३. लन्दन में (१९०२–३ ई०) ... ६९

७. बोल्शेविक और मेन्शेविक (१९०३–५ ई०)

१. जनेवा में (१९०३ ई०) ७३
२. पार्टी-केन्द्र ८०

८. १९०५ की क्रान्ति

१. पृष्ठभूमि ८३
२. संघर्ष का आरम्भ ८८
३. मास्को का विद्रोह ९५

९. एकता के प्रयत्न

१. चौथी पार्टी कांग्रेस (१९०६ ई०) ... ९९
२. पीतरबुर्ग में (१९०६–७ ई०) ... १००
३. पांचवीं पार्टी कांग्रेस (लन्दन, १९०७) ... १०४

१०. परदेश से काम (१९०७–१७ ई०)

१. जनेवा में (१९०७ ई०) १०७
२. प्रथम क्रान्ति का मूल्यांकन ११३
३. पेरिस में (१९०८ ई०) ११५
४. द्वितीय इन्टर्नेशनल के अवसरवादियों से लोहा ११८

११. पुनर्जागृति (१९१०–१२ ई०)

१. नये पत्र : नये बारूदखाने ११९
२. नये ढंग की पार्टी १२२

१२. महान तैयारी (१९१२–१३ ई०)

१. शक्तिशाली पार्टी-संगठन १२३
२. लेनिन क्राको में १२४
३. चौथी दूमा का चुनाव (१९१२ ई०) ... १२७
४. क्राको-कान्फ्रेंस (१९१२ ई०)... ... १२८

१३. प्रथम विश्व-युद्ध (१९१४–१८ ई०)

१. गिरफ्तारी (१९१४ ई०) १३२
२. युद्ध पर निबंध १३३
३. तैयारी १३४
४. साम्राज्यवादी युद्ध १३८
५. लेखन कार्य १४०
६. अभियान की तैयारी १४४

१४. रूस लौटे

१. लौटने में कठिनाइयां १४६
२. स्वागत १४६
३. अप्रैल थीसिस १५१
४. कम्युनिस्ट पार्टी (१६१७ ई०) ... १५२
५. स्थिति का पर्यवेक्षण १५३
६. अज्ञातवास १५७
७. कौर्निलोफ़ का विद्रोह १६२
८. "शक्ति को हाथ में लो !" १६३

१५. महाक्रान्ति (१६१७ ई०)

१. अन्तिम तैयारियां १६४
२. "समाजवादी-क्रान्ति ज़िन्दाबाद !" ... १६६
३. भूचाल के दिन १६८
४. सोवियत सरकार १७१

१६. अग्नि-परीक्षा (१६१८ ई०)

१. समाजवादी पितृभूमि खतरे में ... १७७
२. सातवीं पार्टी-कांग्रेस (१६१८ ई०) ... १८२
३. मास्को राजधानी (१६१८ ई०) ... १८३
४. प्रथम सोवियत-संविधान १८७

१७. गृह-युद्ध (१६१८–२० ई०)

१. काले बादल १८६
२. शक्ति-संचयन १६७
३. चारों ओर से आक्रमण २००

१८. अन्तिम विजय (१६२० ई०)

१. महामानव लेनिन २०५
२. नवीं पार्टी कांग्रेस (१६२० ई०) ... २०७

१६. पुनर्निर्माण कार्य (१६२०–२४ ई०)

१. विजय के बाद २१२
२. "नवीन आर्थिक नीति" २१४
३. राज्य-योजना-कमीशन २१६
४. लेनिन के कुछ गुण २१६
५. ग्यारहवीं पार्टी-कांग्रेस (१६२२ ई०) ... २२१
६. लेनिन और भारत २२२

२०. बीमारी और महाप्रयाण (१९२३–२४ ई०)

१. बीमारी २२७
२. बीमारी के बावजूद २३२
३. १२ वीं पार्टी-कांग्रेस (१९२३ ई०) ... २३४
४. महाप्रयाण (१९२४ ई०) २३५
५. महान् अर्थी २३७
६. गौरवपूर्ण शपथ २३७

परिशिष्ट (वर्ष-पत्र) २४१

चित्र-सूची

१. व्लादिमिर इलिच लेनिन ... टाइटिल पृष्ठ के सामने
२. उलियानोफ़ परिवार ... १६ ,, ,, ,,
३. किशोर लेनिन ... १७ ,, ,, ,,
४. तरुण लेनिन ... १७ ,, ,, ,,
५. माता को सान्त्वना देते हुए ... ४८ ,, ,, ,,
६. पीतरबुर्ग के "मज़दूर-उद्धारक गुट" के सदस्यों के साथ ... ४९ ,, ,, ,,
७. लेनिन और उनकी पत्नी क्रुप्स्काया ... ११२ ,, ,, ,,
८. गोर्की की एक रचना सुनते हुए ... ११३ ,, ,, ,,
९. रेड स्क्वायर में भाषण देते हुए ... २२६ ,, ,, ,,
१०. चिरनिद्रा निमग्न ... २२७ ,, ,, ,,

अध्याय १

बाल्य-काल

(१८७०—८१ ई०)

१. माता-पिता और परिवार

लेनिन को कौन नहीं जानता? लेकिन, १८७० ई० में वोल्गा की उपत्यका के सिम्बिर्स्क नगर में २२ अप्रैल को जब यह मेधावी बालक पैदा हुआ था तो उसका नाम व्लादिमिर रखा गया था। रूसी प्रथा के अनुसार पिता और गोत्र के सम्बंध को बतलाते हुए बहुत दिनों तक इस बालक को व्लादिमिर इलिच (इलिया-पुत्र) उलियानोफ़ कहा जाता था। १८७१ ई० में व्लादिमिर के जन्म ले लेने के समय ही पेरिस के सर्वहारा ने दो महीने तक अपने कम्यून के शासन को चलाकर बतला दिया कि सर्वहारा में शासन करने की क्षमता है, उनमें अपने लिए सब तरह के स्वार्थ-त्याग करने का हृदय है। समाजवाद को धरती पर स्थापित करने में पथ-प्रदर्शन करने वाले, युगों के स्वप्न को साकार रूप देने वाले, वास्तविक तत्वदर्शी कार्ल मार्क्स थे। लेकिन, विश्व में प्रथम साम्यवादी सरकार की स्थापना करके दुनिया के छठे हिस्से से वर्ग-शासन के भीषण शोषण और उत्पीड़न को सर्वदा के लिए बन्द करने का श्रेय वोल्गा तट पर पैदा हुए इसी बालक उलियानोफ़ को है। व्लादिमिर जिस समय पैदा हुआ, उसके बाद भी तेरह साल तक मार्क्स जीते रहे। उनके अभिन्न साथी एंगेल्स तो उस समय तक जीते थे जब कि व्लादिमिर राजनीति में पैर रख चुका था। लेकिन, उसे दोनों के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ, यद्यपि मार्क्स के सफल और यशस्वी उत्तराधिकारी होने का सौभाग्य इसी बालक को प्राप्त हुआ। क्रान्ति के बाद लेनिन की जन्म-नगरी का नाम सिम्बिर्स्क से बदलकर उनके गोत्र के नाम से उलियानोव्स्क पड़ गया।

पिता इलिया निकोलायविच (निकोलाय-पुत्र) उलियानोफ़ अस्त्राख़ान के एक निम्न मध्यवर्ग परिवार में पैदा हुए थे। हाई स्कूल और कज़ान युनिवर्सिटी में शिक्षा समाप्त करने के बाद वह चौदह वर्ष तक पेन्ज़ा और फिर निज़्नी-नवगरोद (वर्तमान गोर्की) में गणित और भौतिकशास्त्र के अध्यापक रहे। इसके बाद, १८६९ ई० से वह सिम्बिर्स्क गुबेर्निया (प्रदेश) के प्रारम्भिक स्कूलों के इन्स्पेक्टर और फिर डाइरेक्टर रहे। लम्बी और भारी सेवाओं के लिए इलिया निकोलायविच को निम्न मध्यम वर्ग से उठाकर कुलीनों की श्रेणी में रख दिया गया। इलिया निकोलायविच उन शिक्षित और प्रगतिशील रूसियों में से थे, जिनको १९ वीं

शताब्दी के उत्तरार्ध में जहां-तहां देखा जाने लगा था और जो व्याधि की जड़ तक पहुँचने की कोशिश न करके शिक्षा के सार्वजनिक प्रचार को सर्वमंगल समझकर उसी में अपनी सारी शक्ति लगाते थे। अपनी इस शिक्षा-सम्बंधी सेवा में वह धीर, उत्साही और कर्मठ थे। वह उसे अपने सभी कामों से बढ़ा-चढ़ा कर समझते थे। अपने बच्चों में शिक्षा और ज्ञान के प्रति प्रेम पैदा करने का उन्होंने खूब प्रयत्न किया और उसमें सफल भी हुए। इलिया निकोलायविच की मृत्यु १२ जनवरी, १८८६ को हुई। उस समय व्लादिमिर सोलह वर्ष के थे।

माता मारिया अलेक्सान्द्रोव्ना (अलेक्सान्द्र-पुत्री) ब्लांक एक डाक्टर की लड़की तथा असाधारण योग्यता वाली स्त्री थीं। वह निसर्गतः तीव्र-बुद्धि और अपने दृढ़ संकल्प तथा उदार-हृदयता के लिए प्रसिद्ध थीं। यद्यपि इसको ध्रुव सत्य नहीं कहा जा सकता, लेकिन आनुवंशिकता-विज्ञान में यह कुछ हद तक स्वीकार किया जाता है कि पुत्र माता की बौद्धिक सम्पत्ति का उत्तराधिकारी होता है और पुत्री पिता की। इलिया निकोलायविच भी योग्य और तीव्र-बुद्धि थे। लेकिन, व्लादिमिर को विरासत अपनी माता की ओर से ज्यादा मिली थी। मारिया अलेक्सान्द्रोव्ना की शिक्षा-दीक्षा में उनके पिता ने कोई कसर उठा नहीं रखी थी। अपनी मातृभाषा (रूसी) के अतिरिक्त वह फ्रेंच, जर्मन और अंग्रेज़ी बोल सकती थीं। संगीत से उनको बड़ा प्रेम था। अपने पुत्र-पुत्रियों से तो प्रेम था ही, बच्चों की शिक्षा-दीक्षा में वह बराबर प्रयत्नशील रहीं। अपने परिवार के वातावरण को उन्होंने संस्कृति, उदार-हृदयता और उच्च आदर्श से अनुप्राणित किया। इसका प्रभाव उनकी छओं सन्तानों पर पड़े बिना नहीं रहा।

छः सन्तानों में तीन बेटे और तीन बेटियां थीं। सबसे बड़ा पुत्र अलेक्सान्द्र, दूसरा व्लादिमिर और तीसरा द्मित्री था। लड़कियां अन्ना, मारिया और ओल्गा थीं। छओं ने अन्त में क्रान्तिकारी बनकर अपना जीवन देश और सर्वहारा की मुक्ति के प्रयत्न में लगाया। मारिया का ज्येष्ठ पुत्र अलेक्सान्द्र ज़ारशाही के चंगुलों से जनता को मुक्त करने के लिए सर्वस्व की बाज़ी लगाने वाले क्रान्तिकारियों के "नरोद्नाया वोल्या" (जन इच्छा) दल में शामिल हो गया और अन्त में उसे फांसी के तख्ते पर झूलना पड़ा। बाकी दो भाई और तीनों बहनें तरुणाई में ही बोल्शेविक बन गये।

व्लादिमिर को क्या बनना है, शायद इसकी भविष्य-कल्पना सुशिक्षित माता-पिता भी नहीं कर सकते थे। लेकिन, वह तीक्ष्ण मेधा का धनी, सजग और सुशील है, यह तो बचपन में ही प्रकट होने लगा था। पांच वर्ष की उमर का बालक व्लादिमिर लिख-पढ़ सकता था। घर में पढ़ने के बाद, नौ वर्ष की उमर में वह सिम्बिर्स्क हाई स्कूल में दाखिल हुआ। अपनी प्रतिभा और परिश्रम के कारण वह पढ़ाई में बहुत अच्छे विद्यार्थियों में रहते हुए हर कक्षा में सबसे अधिक